पाठ - 19
रसूले अकरम ﷺ का न्याय

الدرس التاسع عشر - هندي
عدله ﷺ

जहां तक न्याय करने की बात है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने पालनहार के साथ, अपने नफ़्स के साथ, अपनी पाक पत्नियों के साथ दूसरों के साथ चाहे वह कितने ही क़रीबी हों या अजनबी, साथी हों या दोस्त और हमराज़ हों या विरोधी सभी के साथ अपनी ओर से न्याय को ध्यान में रखते थे यहां तक कि जानी दुश्मन के साथ भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न्याय किया करते थे जिस पर कुछ लोग एतिराज़ किया करते थे और कुछ लोग आप की शान में ग़लतियां कर दिया करते थे मगर आप न्याय को हाथ से नहीं जाने देते थे। सफ़र में हो या क़याम में हर हालत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न्याय व समानता को पसन्द किया करते थे और उन्हीं की तरह मुष्किलों व मुसीबतों को सहन करते थे। आप सहाबा किराम से मुमताज़ रहना पसन्द नहीं किया करते थे।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि बदर के दिन हम लोग एक ऊंट पर तीन सवार थे। अबू लबाबा और अली रजियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैदल चलने की बारी आयी तो उन दोनों ने कहाः ''आप सवार रहें हम पैदल चलते हैं। आपने फ़रमायाः ''तुम दोनों मुझ से ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो और न ही मैं तुम दोनों से ज़्यादा अज्र व सवाब से महरूम रहने वाला हुं।

उसैद बिन हुज़ेर रजियल्लाहु अन्हु अपने साथियों से मज़ाक़ कर रहे थे और उन्हें हंसा रहे थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी कमर में लकड़ी चुभोई उसैद ने कहाः ''आपने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई, मैं आप से इसका बदला लूंगा। आपने कहाः ''बदला ले लो। उसैद ने कहाः ''आपके जिस्म पर क़मीस है जबकि मेरे जिस्म पर क़मीस नहीं थी। तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी क़मीस को हटा दिया। उस समय उसैद रजियल्लाहु अन्हु आप से चिमट गए और आपकी कमर और पसली की हडडी के बीच के हिस्से का बोसा लेने लगे। उसैद ने कहाः ''अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा मक़सद यही था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की सीमाओं को नहीं छोड़ा करते थे जिन्हें अल्लाह ने लोगों के बीच न्याय करने के लिए स्थापित किया है। चाहे जुल्म करने वाला आपका क़रीबी और चहीता ही क्यों न होता, अतएव मख़ज़ूमी महिला की चोरी की घटना में है कि आपने इस बारे में उसामा रजियल्लाहु अन्हु की सिफ़ारिश को स्वीकार नहीं किया और वह मशहूर बात कहीं ''ऐ लोगो! तुम से पहले लोग केवल और केवल इस वजह से हलाक हो गए कि उनमें जब कोई शरीफ़ इन्सान चोरी करता तो उसे छोड़ दिया करते थे और जब कोई कमज़ोर इन्सान चोरी करता तो उसको सज़ा दे देते थे। अल्लाह की क़सम! यदि फ़ातिमा बिन्त मुहम्मद भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काट डालता।